# सिकतासेतुः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

## अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

### » तसिल् प्रत्यय का प्रयोग (स्थान/गमन का संकेत)

**प्रश्न 1 (आसान). ग्रामात् का तसिल् रूप क्या होगा?**

उत्तर – ग्रामतः

**प्रश्न 2 (आसान). आदेः का तसिल् रूप क्या होगा?**

उत्तर – आदितः

**प्रश्न 3 (मध्यम). गृहात् को तसिल् वाले रूप में लिखो।**

उत्तर – गृहतः

**प्रश्न 4 (कठिन). वाक्य बनाओ: "बालकः गृह से गच्छति" को तसिल् रूप में (गृह + तसिल्)।**

उत्तर – बालकः गृहतः गच्छति।

### » ग्रामतः/आदितः आदि: तसिल् द्वारा रूप-निर्माण के उदाहरण

**प्रश्न 5 (आसान). ग्रामात् का तसिल्-रूप कौन-सा होगा?**

उत्तर – ग्रामतः

**प्रश्न 6 (आसान). आदेः का तसिल्-रूप कौन-सा होगा?**

उत्तर – आदितः

**प्रश्न 7 (मध्यम). प्रथमात् के तसिल्-रूप को लिखो।**

उत्तर – प्रथमतः

**प्रश्न 8 (कठिन). अगर "आरम्भात्" का तसिल्-रूप बनाना हो, तो लिखो।**

उत्तर – आरम्भतः

### » 'अभितः/परितः...' योग में द्वितीया विभक्ति

**प्रश्न 9 (आसान). "गृहम् ___ वृक्षाः सन्ति।" रिक्त स्थान में कौन-सा शब्द आएगा–अभितः/परितः/हा में से?**

उत्तर – अभितः

**प्रश्न 10 (आसान). "बालकः ___ प्रति गच्छति।" रिक्त स्थान में "विद्यालयम्" रहेगा और विभक्ति क्या होगी?**

उत्तर – विद्यालयम् (द्वितीया)

**प्रश्न 11 (मध्यम). "नगरम् ___ औषधलयः विद्यते।" 'समया' के योग में सही विभक्तिरूप क्या होगा?**

उत्तर – नगरम् (द्वितीया)

**प्रश्न 12 (कठिन). नियम लागू करो: "क्रीडाक्षेत्राम् ___ तरणतालम् अस्ति।" (संकेत-शब्द "निकषा" है). बताओ–कौन-सी विभक्ति आएगी और वाक्य लिखो।**

उत्तर – निकषा के योग में द्वितीया आती है; वाक्य: "क्रीडाक्षेत्राम् निकषा तरणतालम् अस्ति।"

### » सिकतासेतुः नाट्यांश का कथापरिचय: तपोदत्त और इन्द्र

**प्रश्न 13 (आसान). इस नाट्यांश में विद्याप्राप्ति के लिए कौन प्रयासशील है?**
उत्तर – तपोदत्त

**प्रश्न 14 (आसान). तपोदत्त का मार्गदर्शन कौन करता है?**
उत्तर – पुरुषवेषधारी इन्द्र

**प्रश्न 15 (मध्यम). इन्द्र बालू से क्या बनाने का प्रयत्न करते हैं?**
उत्तर – सेतु (bridge)

**प्रश्न 16 (कठिन). तपोदत्त उपहास करके किस बात पर प्रश्न करता है–किससे और किस काम के लिए?**
उत्तर – वह पूछता है कि बालू से (बालुकाभिः) जलबन्ध/पुल जैसा काम क्यों बना रहे हो।

### » संवाद द्वारा तर्क-निर्माण: 'बालू सेतु' द्वारा विद्याग्रहण का संकेत

**प्रश्न 17 (आसान). बालू सेतु बनाने का तर्क नाट्य में किस बात का संकेत देता है?**
उत्तर – गलत साधन से सही परिणाम नहीं आता–विद्या हेतु भी सही साधन चाहिए।

**प्रश्न 18 (आसान). इन्द्रजी किस शर्त के जरिए तर्क बनाते हैं–'यदि...तदा...'?**
उत्तर – यदि अध्ययन-श्रवण-पठन के बिना विद्या मिल जाए, तो वे बालू सेतु भी बना सकते हैं।

**प्रश्न 19 (मध्यम). पाठ में 'विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव वैफलम्' का अर्थ क्या निकलेगा?**
उत्तर – सिर्फ तप/मेहनत से भी अक्षर-ज्ञान के बिना विद्या प्राप्ति व्यर्थ है।

**प्रश्न 20 (कठिन). संवाद में 'बालू सेतु' और 'विद्या-ग्रहण' का संबंध तर्क के रूप में कैसे समझोगे?**
उत्तर – बालू टिकने वाला आधार नहीं है; इसलिए प्रतीक रूप में यह दिखाता है कि गलत/अपर्याप्त साधन से परिणाम नहीं मिलता। ठीक वैसे ही अक्षर-ज्ञान व अध्ययन-श्रवण-पठन के बिना विद्या नहीं आती–इसलिए संवाद शर्त-तर्क और साधन-आवश्यकता से निष्कर्ष तक ले जाता है।

### » नाट्यांश का निष्कर्ष: अक्षरज्ञान/गुरु-से-विद्या

**प्रश्न 21 (आसान). नाटकांश के निष्कर्ष में विद्या प्राप्ति का सही मार्ग क्या है?**
उत्तर – गुरुगृह जाकर गुरु के समीप अध्ययन-श्रवण-पठन/अभ्यास।

**प्रश्न 22 (आसान). अक्षर-ज्ञान के बिना तपोदत्त के अनुसार क्या होता है?**
उत्तर – "विना लिप्यक्षरज्ञानं" के अनुसार तप व्यर्थ/असफल रहता है।

**प्रश्न 23 (मध्यम). "पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते" का भाव लिखो–विद्या के संदर्भ में।**
उत्तर – मेहनत करनी है, लेकिन सही लक्ष्य/सही मार्ग के लिए–सिर्फ तप नहीं, गुरु-समीप विद्या-प्राप्ति वाला मार्ग।

**प्रश्न 24 (कठिन). अगर कोई कहे–'तप तो काफी है, गुरु की जरूरत नहीं'–तो नाटकांश के निष्कर्ष के आधार पर 3 कारण लिखो।**
उत्तर – 1) शर्त वाली बात: विद्या पाने को सही प्रक्रिया चाहिए। 2) "विना लिप्यक्षरज्ञानं" यानी अक्षर-ज्ञान जरूरी है। 3) अंत में तपोदत्त स्वयं कहता है–"गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो..." और "विद्याध्ययनाय... गच्छामि" यानी गुरु-समीप अध्ययन ही मार्ग है।

## हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

**उदाहरण 1. "प्रथमात् आगच्छति" को तसिल् प्रत्यय वाले रूप में लिखो (जहाँ 'प्रथम' से पंचमी-अर्थ का भाव है)।**

› मूल शब्द पहचानो: प्रथम (प्रथम से '-से/तरफ' वाला भाव चाहिए)।

› तसिल् लगाने के लिए रूप बनता है: प्रथम  प्रथमतः (पंचमी-अर्थ में '...तः')।

› अब वाक्य में सही रूप बैठाओ: प्रथमतः आगच्छति।

**उत्तर – प्रथमतः आगच्छति।**

**उदाहरण 2. वाक्य दें: "छात्राः विद्यालयतः आगच्छति।" इसे तसिल्-रूप पहचानकर लिखो कि यह मूलतः किस रूप से बना है।**

› वाक्य में "विद्यालयतः" शब्द देखो। "तः" वाला रूप तसिल् से बनता है।

› "विद्यालयतः" का भाव "विद्यालय से/विद्यालय की तरफ" है।

› तो तसिल्-रूप "विद्यालयतः" का मूल रूप होगा "विद्यालयात्" (विद्यालय से वाला रूप)।

› अर्थ same रखते हुए: विद्यालयात्  विद्यालयतः.

**उत्तर – "विद्यालयतः" तसिल् द्वारा बना रूप है; इसका मूल "विद्यालयात्" है।**

**उदाहरण 3. "ग्रामम् _____ चरकाः भवन्ति।" रिक्त स्थान में "निकषा" आए, तो "ग्रामम्" का विभक्तिरूप क्या होगा और पूरा वाक्य कैसे बनेगा?**

› निकषा (निकट/पास) संकेत-शब्द है, इसके योग में द्वितीया विभक्ति आती है

› यहाँ संज्ञा "ग्रामम्" पहले से ही द्वितीया (आकारान्त/समूह में) रूप में बैठता है

› तो वाक्य बनेगा: "ग्रामम् निकषा चरकाः भवन्ति।"

**उत्तर – "ग्रामम् निकषा चरकाः भवन्ति।" – "ग्रामम्" पर द्वितीया विभक्ति आएगी।**

**उदाहरण 4. नाट्यांश की पंक्ति "सिकताभिः सेतुनिर्माणार्थं प्रयतते" में कारक-संबंध समझो: यहाँ कौन-सी क्रिया है और किस साधन (material) से काम किया जा रहा है?**

› 'प्रयतते' क्रिया (काम करने का प्रयास) है।

› 'सिकताभिः' से बताया गया है कि यह प्रयास किसके द्वारा/किस साधन से किया जा रहा है (बालू)।

› 'सेतुनिर्माणार्थं' बताता है उद्देश्य–सेतु बनाना।

› इसलिए संबंध: साधन/उपकरण के भाव के लिए '-भिः' वाला रूप आता है और वाक्य का अर्थ बनता है: 'बालू के द्वारा सेतु बनाने का प्रयास करता है'।

**उत्तर – यहाँ 'प्रयतते' क्रिया है; 'सिकताभिः' साधन (बालू) बताता है, और उद्देश्य है 'सेतुनिर्माणार्थम्' (सेतु बनाना)।**

**उदाहरण 5. तपोदत्त कहता है: 'मैं बिना अध्ययन-श्रवण-पठन के भी तप से विद्या पा सकता हूँ।' इन्द्रजी का तर्क समझाओ कि क्यों यह मानना ठीक नहीं होगा, और 'लिप्यक्षरज्ञान' की भूमिका भी बताओ।**

› इन्द्रजी शर्त वाला तर्क देते हैं: अगर अध्ययन-श्रवण-पठन के बिना भी विद्या मिल जाए, तो वे बालू सेतु भी बना सकते हैं।

› क्योंकि बालू नदी में टिक नहीं पाता, वैसे ही केवल तपस्या से 'विद्या' नहीं बनती–साधन चाहिए।

› पुरुषवेषधारी स्पष्ट करता है कि 'विना लिप्यक्षरज्ञानं' तप भी व्यर्थ है।

› इसलिए निष्कर्ष: विद्याग्रहण के लिए सही मार्ग अपनाना होगा–अध्ययन, श्रवण, पठन और अक्षरज्ञान।

**उत्तर – इन्द्रजी का तर्क यह है कि बिना सही साधन (अध्ययन-श्रवण-पठन व अक्षर/लिपि-ज्ञान) के विद्या संभव नहीं मानी जाएगी; इसलिए 'विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव वैफलम्' के आधार पर तर्क बनता है कि सही मार्ग (गुरुगृह जाकर अभ्यास) ही विद्याप्राप्ति का वास्तविक उपाय है।**

**उदाहरण 6. एक छात्र बहुत तप करता है, रोज़ घंटों ध्यान लगाता है, लेकिन पढ़ना-सुनना नहीं करता और अक्षरों का अभ्यास भी नहीं करता। नाटकांश के निष्कर्ष के अनुसार बताओ—उसकी कोशिश से "विद्या/वैदुष्यम्" क्यों नहीं बनेगा, और सही तरीका क्या होगा?**

› देखो, निष्कर्ष पहले शर्त बताता है: "यदि...तदा..."—यानी विद्या चाहिए तो सही प्रक्रिया भी चाहिए।

› फिर संकेत मिलता है: "विना लिप्यक्षरज्ञानं" – अक्षर-ज्ञान के बिना विद्या नहीं बनती।

› अंत में तपोदत्त कहता है: "गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः।" यानी गुरु-समीप जाकर अध्ययन-श्रवण-पठन/अभ्यास करना है।

› इसलिए छात्र को तप अकेला नहीं—गुरु के पास जाकर अक्षर-ज्ञान सहित नियमित अध्ययन करना होगा।

**उत्तर – अक्षर-ज्ञान और गुरु-समीप अध्ययन/श्रवण-पठन के बिना उसकी तपस्या से विद्या नहीं बनेगी। सही तरीका है—गुरुगृह जाकर अक्षर-ज्ञान के साथ विद्याभ्यास (अध्ययन-श्रवण-पठन और अभ्यास) करना।**

## बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- प्रश्नों में '-से/तरफ' वाला भाव आए तो ग्रामात्ग्रामतः जैसे तसिल् रूप लिखना याद रखें।
- तसिल्-रूप पूछे जाएँ तो "...तः" पहचानकर मूल "...ात्/आदेः" जोड़ो।
- NCERT में इन संकेत-शब्दों के साथ द्वितीया पहचानकर तुरंत सही रूप लिखिना—पूरा अंक दिलाता है।
- पात्र-परिचय याद रखो: तपोदत्त (तपस्या) + इन्द्र (पुरुषवेष, सिकता-सेतु) – आगे के वाक्य समझने में काम आएगा।
- NCERT में 'संवाद-आधारित तर्क' का मतलब: शर्त + साधन-आवश्यकता से निष्कर्ष निकालना।
- अंत वाले 2 वाक्य—"गुरुगृहं..." और "विद्याध्ययनाय..."—उत्तर में जरूर लिखो।

## एक नज़र में रिवीज़न

› - पंचमी-अर्थ में '...तः' = तसिल्: ग्रामतः, आदितः, गृहतः

› -से/तरफ भाव तसिल् "...तः" (ग्राम/आदि/गृह/प्रथम/आरम्भ)।

› - अभितः/परितः/उभयतः/सर्वतः/समया/निकषा/हा/प्रति द्वितीया

› - तपोदत्त—तपस्या; इन्द्र—पुरुषवेष, रेत से सेतु, फिर 'किमर्थम्?'

› बालू नहीं टिकता—साधन बिना विद्या नहीं।

› गुरु-समीप + अक्षर-ज्ञान = विद्या